Dated 26/8/2020

B.A part 1 (H) Philosophy

S/o अनीता कुमारी ग्रुप
जे० के० कॉलेज बिरौल

शंकर का ईश्वर तथा उसके अस्तित्व के लिए प्रमाण ?

Ans:- शंकर के अनुसार ब्रह्म तथा ईश्वर को जानने के लिए दो दृष्टिकोण हैं:- एक पारमार्थिक तथा दूसरा व्यावहारिक। ब्रह्म पारमार्थिक दृष्टि से सत्य है और ईश्वर व्यावहारिक दृष्टि से। ब्रह्म निर्गुण और निराकार है परन्तु जब हम उसे विचार का विषय बनाते हैं तब वह ईश्वर हो जाता है। इसलिए ईश्वर को सगुण ब्रह्म कहा गया है। ईश्वर सर्वज्ञ है, सर्वव्यापक, स्वतंत्र है, एक है तथा अन्तर्यामी है। वह जगत का स्रष्टा, पालनकर्त्ता तथा संहारकर्त्ता है। वह नित्य और अपरिवर्तनशील है। ब्रह्म का प्रतिबिम्ब जब माया पर पड़ता में पड़ता है, तब वह ईश्वर हो जाता है। शंकर ने ईश्वर को मायापहित ब्रह्म कहा है। माया ईश्वर की ऐसी शक्ति है जिससे वह विश्व की सृष्टि करता है। ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है। अतः वह उपासना का विषय है। वह नित्य और अपरिवर्तनशील है। कर्म-नियम का अध्यक्ष ईश्वर है। वह कर्मफल दाता है। अतः ईश्वर नैतिकता का आधार है। ईश्वर इस विश्व की सृष्टि अपनी क्रीड़ा के लिए करता है। इस सृष्टि के पीछे उसका कोई उद्देश्य नहीं होता। सृष्टि करना उसका स्वभाव है। शंकर ने ईश्वर को विश्व में व्याप्त होते हुए भी विश्वातीत माना है। जिस प्रकार दूध में उजलापन व्याप्त है, उसी प्रकार ईश्वर विश्व में व्याप्त है। और जिस प्रकार घड़ीसाज की सत्ता घड़ी से अलग रहती है उसी प्रकार ईश्वर विश्व का निर्माण कर अपना संबंध विश्व से विच्छिन्न कर विश्वातीत हो जाता है। ब्रैडले के समान शंकर ईश्वर को ब्रह्म का विवर्त मानते हैं।

ईश्वर अस्तित्व के लिए प्रमाण :- (1) विश्व की रचना संबंधी प्रमाण — यह जगत कार्यरूप है। इस कार्य का कोई कारण अवश्य होगा। शंकर के अनुसार जगत का कारण ईश्वर है, पर ईश्वर का कारण कोई कारण नहीं है।

(2) प्रयोजनवादी तर्क - हम इस जगत में एकता, सामंजस्य तथा व्यवस्था देखते हैं। इस व्यवस्था के पीछे कोई-न-कोई व्यवस्थापक होगा, वही ईश्वर है।

(3) नैतिक तर्क - हम देखते हैं इस जगत के व्यक्तियों के भाग्य में पर्याप्त अन्तर है। व्यक्तियों के कर्मों के अलग-अलग फल प्राप्त होते हैं। इन कर्मों के फलदाता के रूप में ईश्वर का अस्तित्व स्वयं सिद्ध है, क्योंकि ईश्वर कर्माध्यक्ष है।